समय का हेर-फेर

13

(व्यंग्य)

एक गरीब मजदूर सारा दिन *लहू-पसीना* एक कर देने वाली *मेहनत* करने के बाद, शाम के समय दो आने पैसे, अपनी फटी-पुरानी चादर के कोने में बाँधकर शहर से निकला और मजदूरों के बस्ती की ओर चला। बहुत दूर उसने अपने कच्चे झोंपड़े के धुएँ को आकाश में चक्कर काटते देखा और देखते ही समझ गया कि उसकी माँ उसके लिए खाना पका रही है।

वह नंगे सिर, नंगे पाँव जा रहा था। उसके घर में सिवाय उसकी बूढ़ी माँ के सिवाय और कोई सगा-संबंधी न था। उसके घर में एक चूल्हा और दो-चार बर्तनों के अलावा और अन्य कोई साज-सामान न था। मगर फिर भी वह खुश था, आपकी चादर में दो आने पैसे बँधे थे। उसके *दिल* में *आशा* थी।

सामने से एक बारात आ रही थी। मजदूर ने उसे देखा और उसे ख्याल आया—हो सकता है, कभी मेरा भी विवाह हो और मैं भी बारात लेकर विवाह करने जाऊँ। उस समय मैं कितना *खुश* होऊँगा, मेरे साथ-साथ बाजे बज रहे होंगे और बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उससे कहा—"एक तरफ हट जा लड़के।"

मजदूर के विवाह की *कल्पना* मिट्टी में मिल गई। वह जोर से बोला—"क्यों हट जाऊँ? सड़क सिर्फ तुम्हारी नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं।"

बारात वालों ने उसे पीटा, उसकी चादर फाड़ दी और उसे उठाकर सड़क के किनारे झाड़ियों में फेंक दिया।

बारात चली गई। बारात के बाजों का शोर धीरे-धीरे दूर जाकर शहर के प्रकाश में गायब हो गया। अब वहाँ अकेला मजदूर था। उसके चारों *तरफ* रात का *सन्नाटा* था, निराशा का अँधेरा था और दुखी दिल की आहें थीं। वह घुटनों के बल धरती पर बैठ गया और अपनी दुःखी आँखों से आकाश की ओर उठाकर बोला—

"हे प्रभु! हमारे पास न धन-दौलत है, न महल-*अटारियाँ*, न नौकर-चाकर। फिर तूने हमें क्यों पैदा किया?

क्या सिर्फ इसलिए कि अमीरों के नौकर आएँ और हमें मार-पीट कर सड़क के किनारे फेंक दें। आखिर *दुनिया* को हमारी क्या जरूरत है?"

कई वर्ष बीत गए।

मजदूर ने दिन-रात काम किया। दिन का आराम बेचा, रात की नींद बेच दी, शतरंज की चालें चलीं, छल, कपट, धोखे से धन पाया और धनी बन गया।

अब वह मजदूर न था, अपने नगर का नामी *रईस* था। उसके संदूकों में रुपए और *मोहरें* थीं। उसके रहने के लिए एक विशाल महल था। उसकी सेवा करने को दास-दासियाँ थीं। उसकी सवारी के लिए घोड़े और पालकियाँ थीं और लोग उसके सामने सिर झुकाकर आते थे।

एक दिन शाम के समय वह पालकी पर सवार अपने घर लौट रहा था कि अचानक उसकी पालकी रुक गई। उसने पूछा–"क्या है?"

नौकर–"सरकार! मजदूरों की बारात आ रही है।"

धनी- "उन्हें कहो, एक ओर हट जाएँ।"

नौकर–"वे कहते हैं, सड़क सिर्फ तुम्हारे लिए नहीं है। इस पर हम भी चल सकते हैं।"

धनी-"मजदूरों को डंडे मारकर भगा दो। ये हमारा रास्ता क्यों रोकते हैं?"

डंडे बरसने लगे। मजदूर चीखें मारते हुए इधर-उधर भागने लगे। थोड़ी देर में वहाँ एक भी मजदूर न था। मगर उनकी चीखों से अमीर पालकी-सवार का दिमाग खराब हो गया। उसने कहा– "मुझे पालकी से उतार दो। मैं आराम करूँगा।"

नौकरों ने सड़क के किनारे कालीन बिछा दिए और अपने मालिक को आराम से बैठा दिया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे वह यहाँ कभी पहले भी बैठ चुका था। शायद कई वर्ष पहले। शायद किसी पिछले जन्म में।

इस समय उसका शरीर अपनी ड्रेस में गरम था, उसके सामने उसके नौकर हाथ बाँधे खड़े थे और शहर में उसके *राजसी* महल का *द्वारा* उसके लिए खुला था।

वह नरम गलीचे पर *पालथी* मारकर बैठ गया और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर बोला–"हे प्रभो! इन अभागे मजदूरों के पास न धन-दौलत, न ही महल-अटारियाँ और न ही नौकर-चाकर हैं, फिर तूने इन्हें क्यों पैदा किया है? क्या सिर्फ इसलिए कि ये हम लोगों के रास्ते में आ खड़े हों और हमारा समय नष्ट करें। आखिर दुनिया को इनकी क्या *जरूरत* है?"

–*सुदर्शन*

शब्द-अर्थ

अटारी – घर के ऊपर का कमरा, अट्टालिका *(second building)*,
कल्पना – नई बात सोचना *(imagine)*,
छल – धोखा *(cheater)*,
नामी – प्रसिद्ध, मशहूर *(famous)*,
पालथी – जमीन पर बैठने का एक ढंग *(squat)*,
सिवाय – अलावा *(only)*,
मोहरें – सोने के सिक्के *(gold coins)*,
दिल – हृदय, मन *(heart)*,
मेहनत – परिश्रम *(hard work)*,
प्रकाश – रोशनी *(light)*,
तरफ – ओर *(side)*,
जी-जान से काम करना – मन लगाकर काम करना *(to heart work)*,
द्वार – दरवाजे *(gate)*।
खीझना – झुँझलाना, चिढ़ना *(angry)*,
सन्नाटा – चुप्पी *(silent)*,
आह – दु:ख, पीड़ा, कष्ट *(sorrow)*,
कपट – धोखा *(cheater)*,
गलीचा – कालीन, चटाई *(mat)*,
जरूरत – आवश्यक *(necessary)*,
रईस – धनी, धनवान *(rich)*,
लहू-पसीना एक करना – कठिन परिश्रम करना *(difficult work)*,
आशा – चाह, इच्छा *(hope)*,
गायब – छिपना, अंतर्ध्यान *(hide/shumanter)*,
दुनिया – संसार, विश्व *(world)*,
पोशाक – ड्रेस, पहनावा *(uniform/dress)*,
राजसी – राजा की तरह *(as king/kingdom)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

गरीब	आकाश	मेहनत	साँझ	कल्पना
प्रकाश	सन्नाटा	शतरंज	विशाल	पालथी

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) रईस बन चुका मजदूर जब रास्ते से गुजर रहा था, तो उसकी पालकी क्यों रुक गई थी?

(ख) नए रईस ने मजदूरों की बारात देखकर अपने नौकरों से क्या कहा?

(ग) इस व्यंग्य से लेखक क्या बताना चाहता है?

(घ) 'समय का हेर-फेर' पाठ के लेखक का क्या नाम है?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) मजदूर को रास्ते में क्या मिला था?

☐ जुलूस ☐ बारात ☐ राजसी सवारी

(ख) मजदूर की चादर में कितने पैसे बँधे थे?

☐ चार आने ☐ छह आने ☐ दो आने

(ग) बारात वालों ने मजदूर के साथ कैसा व्यवहार किया?

☐ उसे पीटा ☐ उसकी चादर फाड़ दी ☐ ये सभी व्यवहार

(घ) मजदूर ने अमीर बनने के लिए क्या किया?

☐ जी-तोड़ मेहनत ☐ छल-कपट ☐ ये सभी

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) उसके चारों तरफ दुखी दिल की ..... थीं।

(ख) मजदूर ..... मारते हुए इधर-उधर भागने लगे।

(ग) उसकी ..... के लिए घोड़े और पालकियाँ थीं।

(घ) ..... पैसे अपनी फटी चादर में बाँधकर मजदूर शहर से निकला।

(ङ) लोग अब मजदूर ..... के सामने सिर झुकाकर जाते थे।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत वाक्यों के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) मजदूर ने दिन-रात एक किए, शतरंज की चालें, छल आदि किया और धनी बन गया। ☐

(ख) गरीब मजदूर के घर में उसकी बूढ़ी माँ के अलावा और कोई सगा-संबंधी भी था। ☐

(ग) गरीब मजदूर सुबह के समय दो आने पैसे लेकर निकला। ☐

(घ) बारात वालों ने मजदूर को पीटा, उसकी चादर फाड़ दी और उसे उठाकर सड़क के किनारे झाड़ियों में फेंक दिया। ☐

(ङ) वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया और अपनी आँखों से आकाश की ओर देखने लगा। ☐

4. शब्दों को उनके अर्थ से मिलाइए–

शब्द	अर्थ
(क) मेहनत	(i) उजाला
(ख) गरीब	(ii) परिश्रम
(ग) प्रकाश	(iii) निर्धन

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मजदूर खुश क्यों था?

(ख) मजदूर की कल्पना मिट्टी में क्यों मिल गई?

(ग) रईस की पालकी क्यों रुक गई?

(घ) पालकी से उतरकर रईस आराम क्यों करना चाहता था?

6. दिए गए संकेत गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1 – बाजों का शोर किसमें गायब हो गया था?

प्रश्न 2 – चारों ओर किसका अँधेरा था और किसकी आहें थीं?

प्रश्न 3 – "आखिर दुनिया को हमारी जरूरत क्या है?" किसने कहा?

प्रश्न 4 – मजदूर ने भगवान से क्या शिकायत की थी?

प्रश्न 5 – 'सिर्फ' और 'गायब' शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) जी-जान से काम करना – .....

(ख) दिमाग खराब होना – .....

(ग) हाथ बाँधे खड़े रहना – .....

(घ) समय नष्ट करना – .....

(ङ) लहू-पसीना एक करना – .....

2. दिए गए शब्दों से विशेषण बनाइए–

(क) धन – ..... (ख) छल – .....

(ग) कपट – ..... (घ) राज – .....

(ङ) गुण – ..... (च) परिश्रम – .....

3. नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम और विशेषण अलग-अलग करके लिखिए–

वाक्य	सर्वनाम	विशेषण
(क) वह एक गरीब मजदूर था।	.....	.....
(ख) घर में उसके सिवाय बूढ़ी माँ थी।	.....	.....
(ग) उसे ख्याल आया कि मैं भी सुंदर बारात निकालूँगा।	.....	.....
(घ) वह सजल आँखें आकाश की ओर करके बोला।	.....	.....
(ङ) वह नरम गलीचे पर पालथी मारकर बैठ गया।	.....	.....

4. नीचे दिए गए वाक्यों में कारक बताइए–

(क) माँ उसके लिए खाना पका रही हैं। .....

(ख) वह घर में था। .....

(ग) वह धरती पर बैठ गया। .....

(घ) मजदूर ने उसे देखा। .....

(ङ) उसने मजदूर को पीटा। .....

5. सही स्थान पर सही विराम-चिह्न लगाकर वाक्य को पुनः लिखिए–

(क) वह बोला हे प्रभु इन अभागों को तूने क्यों पैदा किया

.....

(ख) उसने कहा मुझे पालकी से उतार दो मैं आराम करूँगा

.....

(ग) बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उससे कहा एक तरफ हट जा छोकरे

.....

6. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

वार्तालाप में हमको व्यापारिक बातचीत और निजी बातचीत में थोड़ा अंतर करना होगा। व्यापारिक बातचीत भी अशिष्ट नहीं होनी चाहिए, किंतु वह नपी-तुली हो सकती है। निजी संबंध की बातचीत में आत्मीयता का अभाव नहीं रहना चाहिए और थोड़ा-सा कष्ट उठाकर बात को पूरी तौर से समझा देना अपना कर्त्तव्य हो जाता है। कुछ लोग सबके साथ निजी संबंध की तरह ही वार्तालाप करते हैं। यह बुरा नहीं है, किंतु बात उतनी ही कही जाए, जितनी निभाई जा सके।

प्रश्न (क) –किन-किन बातों में अंतर करना चाहिए?

प्रश्न (ख) –कैसी बातचीत अशिष्ट नहीं होनी चाहिए?

प्रश्न (ग) –निजी बातचीत में किसका अभाव नहीं रहना चाहिए?

प्रश्न (घ) –कुछ लोग वार्तालाप कैसे करते हैं?

प्रश्न (ङ) –'वार्तालाप' और 'आत्मीयता' शब्द का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

क्रियात्मक गतिविधि

- श्री प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'नशा' पढ़िए और उसकी इस कहानी से तुलना कीजिए।
- क्या आपने किसी गरीब या असहाय को अपमानित होते हुए देखा है? यदि हाँ, तो उस समय उसके मन में क्या प्रतिक्रियाएँ उभरी होंगी, इस बारे में अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।